Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 14/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-
operant learning mode and Classical conditioning or respondent learning.

क्रियाप्रसूत सीखना (operant learning): इस मॉडल का विकास वी. एफ. स्कीनर (B-F Skinner) द्वारा किया गया जिनका मत है कि व्यवहार सीखे जाते हैं तथा किसी व्यवहार को सीखने में अप्रेक्षणीय चरों विशेषकार आवश्यक (Need) तथा प्रणोद (drive) आदि की कोई भूमिका नहीं होती है क्योंकि ये आत्मनिष्ठ चर होते है जिन्हें मापा नहीं जा सकता है। स्कीनर के अनुसार हमें किसी व्यवहार की उत्पत्ति, संपोषण (maintenance) तथा उसमें उत्पन्न परिभार्जन को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पर्यावरणी उद्दीपनों (environmental Stimuli) तथा उससे उत्पन्न होने वाले व्यवहारों के वीच के संबंध को समझा जाय। स्कीनर ने स्पष्ट किया है कि किसी भी व्यवहार को समझने के लिए यह नहीं आवश्यक है कि व्यक्ति के उपाह आवेगों (id impulser) के बारे में जाना जाय वल्कि इस बात का प्रेक्षण तथा विवरण आवश्यक है कि कोई भी व्यवहार किस तरह से उसके पूर्ववर्ती कारकों (antecedent factors) तथा अनुवर्ती कारकों (Conseqnent factors) से नियमित होता है। इस उपागम को कार्यबाही विश्लेषण (functional analysis) उपागम भी कहा जाता है। क्योंकि इस उपागम में उद्दीपकों, अनुक्रियाओं एवं उनके परिणामों के कार्यवाही संबंधी बल पर अधिक बल डाला जाता है। उदाहरण के तौर पर मान लिया जाय कि कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति में आक्रामक व्यवहार करता है। अब स्कीनर के कार्यवाही विश्लेषण उपागम (functional analysis approach) में इसकी व्याख्या व्यक्ति की किसी आवश्यकता के रूप में नहीं की जायगी। यह नहीं कहा जायगा कि इस आक्रामक व्यवहार से व्यक्ति की प्रभुत्व आवश्यकता (dominance need) का पता चलता है वल्कि इस उपागम में यह आक्रामक व्यवहार तथा उसके परिणाम के बीच संबंध जोड़कर कोई उपयुक्त व्याख्या की जायगी। यदि व्यत्ति के इस आक्रामक व्यवहार के बाद उसे पुस्कार मिलता है या किसी प्रकार का लाभ होता है अर्थात उसका परिणाम सुखद होता है, तो स्कीनर की व्याख्या यह होगी कि व्यक्ति आक्रामक व्यवहार करना सीख लिया है। इसी तरह से तरह-तरह के व्यवहार विकृतियों की व्याख्या भी कार्यवाही विश्लेषण उपागम के तहत की गयी है।

Classical conditioning or respondent learning:

व्यवहारात्मक मॉडल के दूसरे रूपान्तर में पैवलव द्वारा प्रतिपादित क्लासिकी या प्रतिवादी अनुबंधन के नियमों को आधार बना कर मानव व्यवहार की उत्पत्ति, संपोषण एवं उनमें होने वाले परिभार्जन की व्याख्या की जाती है। इस मॉडल के इस रूपान्तर की सोदाहरण व्याख्या जो सेफ ओल्फ (Joseph Wolf, 1958, 1982) तथा हंस आइजेन्क (Hans Eysenek, 1982) द्वारा किया गया है मुख्य रूप से चिंता विकारों से उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए व्यवहार मॉडल के संशोधित रूप का उपयोग दूर करने में किया है। इस रूपान्तर में अनुबंधित उद्दीपक (conditioned Stimulus) तथा स्वभाविक उद्दीपन (unconditioned stimulus) के बीच साहचर्य (association) के सीखने पर बल डाला जाता है। इस तरह के सीखने की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुबंधित उद्दीपक (Conditioned stimulus) द्वारा ही अनुक्रिया की उत्पत्ति होती है। मॉडल के इस रूपान्तर के अनुसार

व्यक्ति अंधेरा से हरना इसलिए सीख जाता है कि व्यक्ति में अंधेरा में तरह-तरह के डर उत्पन्न करने वाले उद्दीपक जैसे डरावना स्पप्न, डरावना स्वप्न चिन्तन (fantasy) आदि उत्पन्न होने लगता है।

क्लासिकी सीखना रूपान्तर में क्रिया प्रसूत सीखना (operant learning) के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जाता है परंतु इसमें अनुबंधित उद्दीपक तथा स्वभाविक उद्दीपक के साहचर्य द्वारा उत्पन्न सीखना पर तुलनात्मक रूप से अधिक बल डाला जाता है। मार्कर (Mower, 1939, 1948) का मत है कि कोई विशिष्ट व्यवहार के उत्पन्न होने में क्रिया प्रसूत अनुबंधन तथा क्लासिकी अनुबंधन दोनों की भूमिका होती है।

(iii) सामाजिक सीखना या संज्ञानात्मक व्यवहारपरक सीखना (Social learning or cognitive behavioural learning) : यद्धपि क्लासिकी अनुबंधन या प्रतिवादी सीखना को उपयोग नैदानिक उपचार तथा शोध में काफी हुआ है फिर भी इसे सार्वनिक रूप से मान्यता नहीं मिली है क्योंकि इसमें सिर्फ व्यक्ति के बाद वयवहारों पर बल डाल गया है और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे चिन्तन प्रत्यक्षण आदि की पूर्ण उपेक्षा की गयी है सामाजि सीखना या संज्ञानात्मक व्यवहार परक सीखना में ऐसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण मान कर मानव व्यवहार की उत्पत्ति, संपोषण एवं परियार्जन (modification) की व्याख्या की जाती है।

सामाजिक सीखना उपागम में दोमनोवैज्ञानिकों अर्थात अलबर्ट वैण्डुरा (Albert Bandura) तथा वाल्टर मिसकेल (Walter mischel) का नाम अधिक मशहूर है। वैणुरा ने अपने उपागम में प्रेक्षणात्मक सीखना (obsorvational learning) या स्थानापन्न संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ (Vicarious Cognitive process) पर अधिक बल डाला है। वैण्डुरा का मत है कि व्यक्ति ने केवल क्रिया प्रसूत एवं क्लासिकी अनुबंधन द्वारा प्रत्यक्ष रूप से सीखता है बल्कि वह दूसरों के व्यवहारों का प्रेक्षण करके या घटना के सांकेतिक प्रतिनिधित्व (Symbolic pepresentation) दो देख कर परोस रूप से भी सीखता है। इन्होंने अपने प्रयोग में दिखलाया है कि मानव प्रयोज्य मॉडल के व्यवहार का मान प्रेक्षण कर ही उसे सीख लेता है। इसके लिए पुनर्बलन (reinforcement) तथा अभ्यास (practice) की भी जरूरत नहीं पड़ती है। वैण्डुरा, रॉस एवं रॉस (Bandwra] Rossand Ross, 1963) ने अपने अध्ययन में पाया है कि जिन बच्चों ने मॉडल को 'बोबो' नामक गुढ़िया (Bobodoll) के प्रतिआक्रामक व्यवहार करते पाया, वे उसके प्रति वैसी ही व्यवहार करना सीख लिए तथा जिन बच्चों ने मॉडल को 'बोबो' के प्रति शांतिपूर्ण व्यवहार करते प्रेक्षण किया, वे उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करना सीख लिए। बैण्डुरा के अनुसार ऐसे सीखना का कारण न तो अभ्यास है और न ही पूनर्बलन बल्कि इसका कारण है कि प्रेक्षणात्मक सीखना से उत्पन्न चिनतन प्रक्रियाएँ या संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ।

रौटर (Rotter, 1954) ने भी सीखने में नात्मक संज्ञा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मानव सीखना में 'प्रत्यासो' (Expectancy) चर को अति महत्वपूर्ण वतलाया है। रौटर के अनुसार किसी अनुक्रिया के होने की सम्भावना दो वातों पर निर्भर करता है-पहला तो यह कि व्यक्ति अनुक्रिया के बाद क्या होने या घटना घटने की प्रत्याशा करता है तथा दूसरा यह कि वह अनुक्रिया के उस परिणाम (या घटना) को कितना महत्व देता है। रौटर का मत है कि इस तरह की प्रत्याशा जिससे व्यवहार प्रभावित होत है, अर्जित होता है अर्थात व्य. उसे अपने जीवन काल में सीखता है। किसी भी व्यवहार के परिणाम के वारे में प्रत्याशा विकसित करने के लिए या उसके महत्व या मूल्य (Value) के वारे में कोई निर्णय लेने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति को उसके पहले वैसी परिस्थिति का प्रत्यक्ष या स्थानान्य (Vivarium) अनुभव हो। हाल ही में वैण्डुरा ने रौटर के प्रत्यासा संप्रव्यय से हटकर एक नया समान संप्रत्यय का विकास किया है जिसे आत्मक्षमता (Self-efficacy) कहा गया है। आत्मक्षमता प्रत्यासा (Self efficiency expression) से तात्पर्य व्यक्ति में इस विश्वास से होता है कि यह अचूक व्यवहार को चाहे उसका परिणाम कुछ भी हो, सफलता पूर्वक कर सकता है। वैण्डुरा ने यह स्पष्ट किया है कि व्यक्ति द्वारा किया गया बाहयव्यवाहार (overt behaviour) इसी आत्मक्षमता प्रत्यासा से नियमित होता है। आरंमक्षमता प्रत्याशा का स्तर जितना ही ऊँचा होता है उसका निस्यादन स्तर भी उतना ही श्रेष्ठ होता है।

मिसोल (Mischel, 1986, 1989) द्वारा प्रतिपादित सीखने के उपागम में पाँच तरह के संज्ञानात्मक चरों (cognitive variables) की पहचान की गयी है जिनसे व्यक्ति तथा वातावरण के बीच होने वाली अन्तः क्रिया को समझा जा सकता है इन पाँच चरों का वर्णन निम्न है-

(1) क्षमताएँ (Competencies): इसमें विशेष तरह के व्यवहार एवं संज्ञान को उत्पन्न करने की क्षमता सम्मिलित होती है। यह बुद्धि व्याब्धि, सामाजिक वौद्धिक उपलब्धियाँ, अहं विकास, मानसिक परिपक्वता आदि से संबंधित होता है।

(ii) कूट संकेतन उपाय एवं वैयाक्तिक संरचना (encoding strategy and personal constructs) : इसके तहत व्यक्ति में घटनाओं, आत्मन (Self) एवं अन्य लोगों को विश्लेषित करने की इकाइयों को रखा जाता है।

(iii) प्रत्यासा (Expectation): इसमें व्यवहार परिणाम प्रत्याशा, उद्दीपक परिणाम प्रत्याशा एवं आत्मक्षमता प्रत्याशा (Self efficacy expectation) आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(iv) आत्मनिष्ठ मूल्य (subjective values): इसमें प्रोत्साहन (incentives) एवं अभिप्रेरणात्मक उद्दीयक आदि को रखा जाता है।

(v) आत्मनियमित तंत्र एवं उपाय (Self regulatory system and plans): इसमें जटिल व्यवहार अनुक्रमों (consequences) के संगठन एवं निस्पादन के लिए आत्म प्रतिक्रियाएँ एवं अन्य संबंधित नियमों को रखा जाता है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि सामाजिक सीखना उपागम की आरंभिक व्याख्या में व्यवहारों के परिणाम के प्रत्याशा पर बल डाला गया है। परंतु इसकी आधुनिक व्याख्या जिसे बेक (Beek, 1976), सेलिगमैन (Seligman, 1978) तथा इलिस (Ellis 1962) द्वारा किया गया है, में वर्तमान व्यवहार तथा लम्बे अरसे से चले आ रहे विश्वास (Belief) को पर्याप्रमान्यता दी गई है। इनमें से बेक ने वर्तमान व्यवहार के मूल्यांकन पर, सेलिगमैन एवं उनके सहयोगियों वर्तमान व्यवहार के गुणारोपन (attribution) पर तति इलिस ने लंबे अरसे से आ रहे विश्वास पर अधिक बल डाला है।